सम्पादक

डॉ. सुनील बापूराव कुलकर्णी (देशपव्हाणकर)
डॉ. गजानन सुरेश वानखेडे

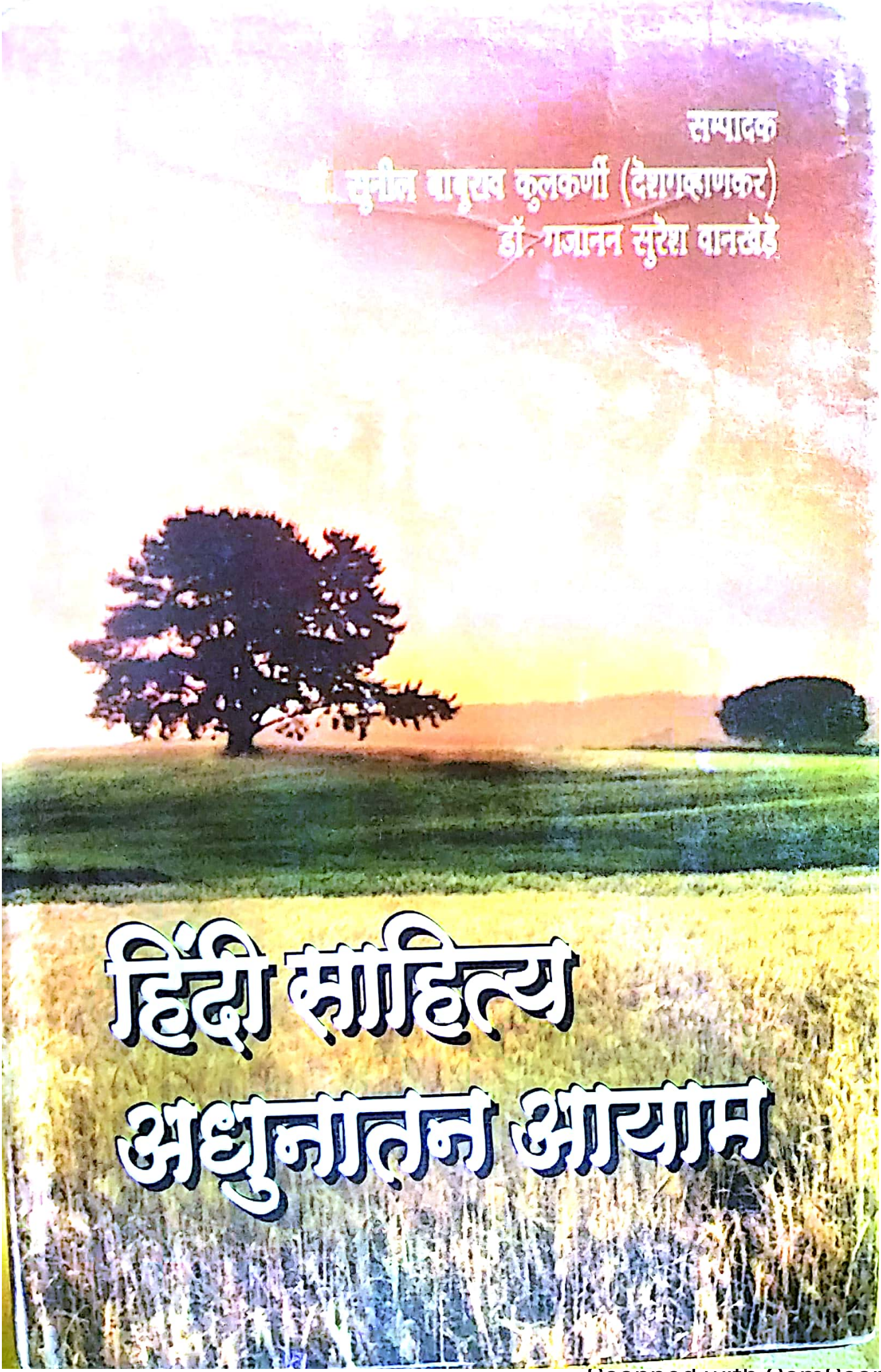

हिंदी साहित्य अधुनातन आयाम

Scanned with CamScanner

मूल्य : पाँच सौ पचास रुपये मात्र

पुस्तक	:	हिंदी साहित्य : अधुनातन आयाम
संपादक द्वय	:	डॉ. सुनील बाबुराव कुलकर्णी
		डॉ. गजानन सुरेश वानखेडे
प्रकाशक	:	**विकास प्रकाशन**
		311 सी, विश्व बैंक, बर्रा - कानपुर - 208 027
संस्करण	:	प्रथम, 2017
आवरण सज्जा	:	छपाई घर, ब्रह्मनगर, कानपुर
शब्द सज्जा	:	रिचा ग्राफिक्स, नौबस्ता, कानपुर।
मुद्रक	:	साक्षी ऑफसेट, यशोदा नगर, कानपुर
मूल्य	:	550/-
ISBN	:	978-93-81279-92-2

Scanned with CamScanner

03. **प्रेमचंद कृत कालजयी उपन्यास 'गोदान' की प्रासंगिकता** 98
डॉ. गजानन वानखेडे

04. **अनामिका की कविताओं में महानगरीय आधुनिकता** 103
डॉ. मनोज नामदेव पाटील

05. **समकालीन हिंदी कहानियों में नारी चेतना** 108
डॉ. विजया पिंजारी–शिंदे

06. **अनामिका की कविता और आधुनिकता** 115
प्रा. डॉ. गिरीश कोळी

07. **जनचेतना का नाटयशिल्प नरेन्द्र मोहन** 119
डॉ. रेखा गाजरे

08. **'हमारा शहर उस बरस' उपन्यास में अधुनातन आयाम** 131
श्री तायडे राजाराम बाबुराव

09. **'कफ़न' में अभिव्यक्त दलित संवेदना** 136
डॉ. देवेंद्र बोंडे

10. **धूमिल के काव्य में मानवता** 141
डॉ. बेवले ए. जी

11. **'क्याप' उपन्यास में अभिव्यक्त मिथक फंतासी एवं जादुई यथार्थवाद** 148
श्री कोमलकुमार परदेशी

12. **भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में हिंदी कविताओं का योगदान** 152
प्रा. आर. डी. गवारे

13. **साठोतरी कविताओं में नया भावबोध** 157
डॉ. प्रीति सोनी

14. **गुलामी से दलित मुक्ति का मूलमंत्र : मुक्तिपर्व** 161
डॉ. रमेश कुर

15. **औरत अस्तित्व और अस्मिता 'बेघर' उपन्यास के संदर्भ में** 169
डॉ. शिवाजी सांगोळे

16. **स्वातंत्र्योतर हिंदी का मूल्यांकन** 174
डॉ. प्रमिला महानंदे

17. **महापंडित राहुल सांकृत्यायन और डॉ. राजेंद्र प्रसाद की आत्मकथा का तुलनात्मक अध्ययन** 178
डॉ. रविंद्र पाटील

Scanned with CamScanner

12

भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में हिंदी कविताओं का योगदान

प्रा. आर. डी. गवारे

किसी भी संग्राम में सेनानियों को जोड़े रखने एवं प्रोत्साहित, ऊर्जावान बनाये रखने के लिए भाषा का एक महत्वपूर्ण स्थान होता है। राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी स्वाधीनता एवं देश की एकता का प्रतीक है। हिंदी में स्वदेशी शासन का भाव झलकता है। खड़ीबोली का आधुनिक काल भारत में ब्रिटिश शासन की स्थापना से शुरू होता है। स्वतंत्रता संग्राम में एक ऐसी भाषा की आवश्यकता थी जो सभी को समझ में आये। खड़ीबोली हिंदी या हिंदुस्थानी ही सामान्य बोलचाल की एकमात्र भाषा थी जो किसी-किसी रूप में देश के ज्यादातर भागों में समझी और बोली जाती थी। एक राष्ट्र और एक राष्ट्रभाषा की भावना यहाँ जाग्रत हो उठी। परतंत्र भारत में स्वाधीनता सेनानियों के बीच स्वतंत्रता की अलख जगाये रखने के लिए हिंदी भाषा और साहित्य ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। स्वाधीनता संग्राम में शामिल हर प्रान्त, सम्प्रदाय या धर्म के सेनानियों ने एक स्वर में हिंदी के तराने गाकर स्वतंत्रता का मार्ग प्रशस्त किया था। हिंदी कवियों ने प्रेरणादायी एवं वर्तमान दुर्दशा को चित्रित करनेवाला साहित्य लिखकर अपने कर्त्तव्य का निर्वाह किया। भारतेंदु कालीन समय वह समय था जबकि अँग्रेजों की दमनकारी नीतियाँ पूरे देश में फैल चुकी थीं। भारतेंदु, राधाकृष्णदास, प्रेमघन, श्रीधर पाठक आदि कवियों के काव्य में विदेशी शासन के प्रति असंतोष, भारतीय एकता का सन्देश, जन-जागरण का आवाहन, भारतीय दुरावस्था पर आक्रोश आदि दिखाई देता है। भारत दुर्दशा में भारतेंदु ने मुखर होकर कहा–

भीतर भीतर सब रस चूसे, हंसि-हंसि के तन-मन-धन मुसै ।
जाहिर बातन में अति तेज, क्यों सखी साजन ? नहीं अँग्रेज ।।

बद्रीनारायण चौधरी प्रेमघन जी की कविताओं में राष्ट्रीय भावना सजग है। 'आनंद अरुणोदय' कविता में नवजागरण की ओर संकेत करते हुए वे लिखते हैं–

अरुणोदय एकता-दिवाकर, प्राची दिशा दिखाती,
देखा नव उत्साह परम पावन प्रकाश फैलाती ।

Scanned with CamScanner

श्रीधर पाठक जी ने भारत की प्राकृतिक सुषमा, देश की महिमा और अतीत गौरव का गान करते हुए जनता के मन में देशानुराग की भावना को जगाने का प्रयास किया। स्मरणीय भावकविता में वे लिखते हैं–

वन्दनीय वह देश, जहाँ के देशी निज-अभिमानी हों
बांधवता में बंधे परस्पर परता के अज्ञानी हों।

द्विवेदी कालिन कवियों में मैथिलीशरण गुप्त, अयोध्यासिंह उपाध्याय, रामनरेश त्रिपाठी, माखनलाल चतुर्वेदी, सोहनलाल द्विवेदी, नाथूराम शर्मा शंकर, गयाप्रसाद शुक्ल सनेही आदि कवियों ने राष्ट्रीयता एवं नवजागरण की मशाल जलाकर भारतीयों को समरांगन की और बढ़ने तथा देश के लिए प्राण न्योछावर करने की प्रेरणा प्रदान की। राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त जी ने अपने काव्य के माध्यम से वर्तमान की अधोगति एवं अतीत की महत्ता की तुलना करके जनता को सचेत किया। उनके भारत-भारती इस काव्य को अँग्रेज सरकार ने जब्त कर लिया था। डॉ. उमाकांत ने उनके विषय में अपने विचार व्यक्त करते हुए लिखा है कि भारतीय संस्कृति के प्रवक्ता होने के साथ-साथ मैथिलीशरण गुप्त प्रसिद्ध कवि भी हैं। उनकी प्रायः (कोलन) सभी रचनाएँ राष्ट्रीयता से ओत-प्रोत हैं। गुप्त जी कहते हैं कि–

जो भरा नहीं है भावों से, जिसमें बहती रसधार नहीं ।
वह हृदय नहीं है पत्थर है, जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं।

एक भारतीय आत्मा के नाम से परिचित माखनलाल चतुर्वेदी जी ने नवयुवकों को देश के लिए मर मिटने का सन्देश दिया है। उनके हिमकिरीटिनी तथा हिमतरंगिनी काव्यों में जहाँ क्रान्ति की भावना दिखाई देती है, वहाँ राष्ट्रीय भावना जगाकर नवयुवकों को देश के लिए बलिदान की भावना भी निर्माण करते हैं। हिमकिरीटिनी में वे कहते हैं–

बलि होने की परवाह नहीं, माता के हाथ स्वराज्य रहे ।
में जीता, जीता-जीता हूँ, में हूँ कष्टों का राज्य रहे ।

पुष्प की अभिलाषा एवं कैदी और कोकिला इन रचनाओं में उन्होंने लोगों को बलिदान की प्रेरणा दी है। पुष्प की अभिलाषा इस काव्य में वे लिखते हैं–

मुझे तोड़ लेना वनमाली, उस पथ पर देना तुम फेंक,
मातृ भूमि पर शीश चढ़ाने, जिस पथ पर जावें वीर अनेक।

गयाप्रसाद शुक्ल सनेही अपने काव्य के माध्यम से देश प्रेम की प्रेरणा देते हैं–

जिसको न निज गौरव तथा निज देश का अभिमान है,
वह नर नहीं नर पशु निरा है और मृतक समान है ।

Scanned with CamScanner

नाथूराम शर्मा शंकर जी अपने काव्य में न्योछावर होने की प्रेरणा देते हैं–

देशभक्त वीरों मरने से नेक नहीं डरना होगा,
प्राणों का बलिदान देश की वेदी पर करना होगा।

सोहनलाल द्विवेदी जी राष्ट्रीय-सांस्कृतिक काव्यधारा के अत्यधिक ओजस्वी कवि रहे हैं। इनके भैरवी, विषपान, युगांधर, चेतना आदि काव्यसंग्रह प्रकाशित हुए। उन्होंने भारतीय नवयुवकों में पराधीनता की बेड़ी काटने हेतु प्राणोत्सर्ग करने को कहा है। 'खड़ा हिमालय बता रहा है' इस कविता में वे लिखते हैं–

डरो न आँधी पानी में, खड़े रहो तुम,
अविचल होकर सब संकट तूफानो में।

अभियान गीत नामक काव्य में वे लिखते हैं–

बलि वेदी पर भीड़ लगी है, आज अमर बलिदानों की,
आज चली है सेना फिर से, धीर-वीर मस्तानों की।

छायावादी युग में भी नवजागरण की कविता लिखी गई। यह समय 1920 से 1936 के बीच का था। इस काल में काफी महत्वपूर्ण घटनाएँ घटित हुई। जिनमें काकोरी षड़यंत्र केस 9 अगस्त 1925, सँडर्स हत्याकांड 17 दिसंबर 1928, असेम्बली बमकांड 8 अप्रैल 1929, भगतसिंह, सुखदेव राजगुरू को फाँसी 23 मार्च 1931 जैसे घटनाक्रम इसी काल के है। हिंदी साहित्य के कवि इस समय क्रान्तिवीरों को प्रेरणा दे रहे थे। इनमें सुभद्राकुमारी चौहान, बालकृष्ण शर्मा नवीन, प्रसाद, निराला की रचनाएँ विशिष्ट हैं।

सुभद्राकुमारी चौहान की रचनाओं में भारतीय युवकों को देश के विगत गौरव से अवगत कराने हेतु प्राचीन ऐतिहासिक गौरव को वाणी दी है। जालियाँवाला बाग़ में बसंत कविता में वे लिखती हैं–

कोमल बालक मरे यहाँ गोली खाकर,
कलियाँ उनके लिए गिराना थोड़ी लाकर ।

झाँसी की रानी कविता में वे लिखती है –

चमक उठी सन सत्तावन में वह तलवार पुरानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वो तो झाँसी वाली रानी थी ।

बालकृष्ण शर्मा नवीन जी भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के सशक्त एवं निर्भीक सैनिक रहे हैं। विप्लव गान में वे कहते हैं–

कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ जिससे उथल पुथल मच जाए
एक हिलोर इधर से आए, एक हिलोर उधर से आए ।

जय शंकर प्रसाद जी ने शेरसिंह का आत्मसमर्पण, पेशोला की प्रतिध्वनि में चेतना प्रदान की है। प्रसाद के गीत हिमाद्री तुंग श्रृंग से प्रबुद्ध शुद्ध भारती में

Scanned with CamScanner

भारत का गुणगान है। महाकवि निराला जी के भारती वंदना, जागो फिर एक बार, राम की शक्तिपूजा, यमुना के प्रति, छत्रपति शिवाजी का पत्र आदि कविताओं में राष्ट्रीयता एवं देशप्रेम का चित्रण हुआ है। जागो फिर एक बार में वे लिखते हैं–

तुम हो महान, तुम सदा हो महान
है नश्वर यह दिन भाव,
कायरता, कामपरता
ब्रह्म हो तुम, पदरज भर भी है नहीं
पूरा यह विश्व भार, जागो फिर एक बार

वाणी वन्दना में भी निराला ने भारत को स्वतंत्रता की गूंज से भरने का आग्रह किया है। वे लिखते हैं–

वीणा वादिनी वर दे
प्रिय स्वतंत्र रव अमृत मंत्र नव, भारत में भर दे।

राष्ट्रीय एवं सामाजिक चेतना मुखर करने में रामधारी सिंह दिनकर का भी महत्वपूर्ण स्थान है। उनकी कविताओं में प्रकट विद्रोह एवं क्रान्ति स्वर तत्कालीन राजनैतिक एवं सामाजिक परिस्थितियों का परिणाम है। उनकी रेणुका, हुंकार, सामधेनी, दिल्ली, परशुराम की प्रतीक्षा आदि रचनाओं में क्रान्ति की भावना उजागर हुई है। हुंकार में देश को स्वाधीन बनाने का संकल्प है।

ले अंगड़ाई उठ, हिले धरा
कर निज विराट, स्वर में निनाद
तू शैल-राट हुंकार भरे
फट जाए कुहा, भगे प्रमाद ।

सारांश रूप में हम कह सकते हैं कि, भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में हिंदी कविता का योगदान महत्वपूर्ण रहा है। भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन के आरंभ से लेकर स्वतंत्रता प्राप्ति तक राष्ट्रीय भावनाओं से ओत-प्रोत काव्य लिखकर क्रान्तिकारियों, सेनानियों एवं आम भारतीय जनमानस में देश के लिए न्योछावर होने की प्रेरणा जगाई। भारतेंदु युग की कविताओं में अंग्रेजी शासन के विरुद्ध हमारी संघटित राष्ट्रभावना का बिगुल था। जिसके फलस्वरूप द्विवेदीयुग ने प्रस्थान किया। छायावादी एवं छायावादोत्तर कवियों ने भी अपने काव्य के माध्यम से अमूल्य योगदान दिया। हिंदी साहित्य की अनेक कालजयी रचनाएँ इसी समय रची गईं।

सन्दर्भ

1. प्रतियोगिता साहित्य · अशोक तिवारी

Scanned with CamScanner

2. नवजागरण की कविताएँ और दिनकर – आलेख – डॉ. एन. पी. कुट्टन पिल्लै राजभाषा भारती अंक 138 अप्रैल–जून 2013
3. हिंदी को राष्ट्रीय संस्कृति बनानी होगी – आलेख– डॉ. एम. डी. थॉमस राजभाषा भारती अंक 136 अक्तूबर– दिसंबर 2012
4. हिंदी तब से अब तक – आलेख– ओम मल्होत्रा– राजभाषा भारती अंक 136 अक्तूबर – दिसंबर 2012
5. विकिपीडिया एवं विभिन्न वेबसाइट्स

हिंदी विभाग प्रमुख,
अ.र.भा.गरुड़ कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय
शंदुर्णी, तह. जामनेर जि. जलगांव
मो .9637525680

Scanned with CamScanner

जन्म : 01 जून, 1975 (एक जून उन्नीस सौ पचहत्तर)

शिक्षा : एम.ए., एम. फिल, पीएच.डी. सेट,

डॉ. सुनील बाबुराव कुलकर्णी
([illegible])

प्रकाशित पुस्तकें :

- कबीर और तुकाराम के काव्य में प्रगतिशील चेतना, विकास प्रकाशन, कानपुर
- समकालीन साहित्य विमर्श, साधना प्रकाशन, परभणी।
- होरपल (मराठी काव्य संकलन) सागर प्रकाशन, परभणी।
- सामाजिक समरसता के अग्रदूत संत कवि, विकास प्रकाशन, कानपुर।

संपादित पुस्तकें :

- संत साहित्य की आधुनिक अवधारणाएँ, अतुल प्रकाशन, कानपुर।
- "राष्ट्रभाषा हिन्दी : कितनी सही कितनी प्रेरक", शैलजा प्रकाशन, कानपुर।
- भारतीय भक्ति साहित्य में अभिव्यक्त सामाजिक समरसता, लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद।
- हिन्दी साहित्य : अधुनातन आयाम, विकास प्रकाशन कानपुर।
- अनूदित पुस्तक : (मराठी से हिंदी में अनूदित)
- ढोहता हूँ कविता को पालकी, रोली प्रकाशन कानपुर।
- दमन, साहित्य निकेतन प्रकाशन बिजनौर उत्तरप्रदेश।
- भारतीय गाँव : अर्थ एवं राजनीति - यशवंतराव चव्हाण महाराष्ट्र मुक्त विद्यापीठ, नाशिक
- जनसंख्या अध्ययन : मूल्यांकन अनुसंधान - यशवंतराव चव्हाण महाराष्ट्र मुक्त विद्यापीठ, नाशिक

- **सम्प्रति :** हिन्दी विभागाध्यक्ष, उत्तर महाराष्ट्र विश्वविद्यालय, जलगाँव-425001

संपर्क : 09422217600

ई-मेल : sbkulkarni@nmu.ac.in

विकास प्रकाशन, कानपुर

टेलीफैक्स : 0512-2543549

मो. : 9415154156, 9450057852

E-mail : vikasprakashankanpur@gmail.com

Website : www.vikasprakashan.com

ISBN 978-93-81279-92-2

9 789381 279922

₹ 550.00

Scanned with CamScanner